अध्याय नौ

आर्थिक प्रवृत्तियां

जीविका के प्रतिरूप

इस जिले में लोग अपनी जीविका या तो कृषि या कृष्येतर क्षेत्र में कार्य करके कमाते हैं। वर्ष 1951 की जनगणना के अनुसार पहली श्रेणी में, स्वामी कृषक (Owner cultivators), काश्तकार-कृषक (Tenant cultivators), खेतिहर मजदूर (Cultivating labourers) तथा कृषि न करने वाले भू-स्वामी (जिनमें कृषि संबंधी लगान वसूल करने वाले व्यक्ति सम्मिलित हैं, और इन सभी चार श्रेणियों वालों पर आश्रित व्यक्ति आते हैं। दूसरी श्रेणी में आने वाले लोग उत्पादन (कृषि से भिन्न), उद्योग, वाणिज्य, परिवहन तथा अन्य सेवाओं में सेवायोजित हैं। नीचे दिए गए विवरण में (1951 की जनगणना के अनुसार, इन दो श्रेणियों में लगे व्यक्तियों का प्रतिशत दिखाया गया है।

जीविका की श्रेणी	जिला	ग्रामीण	नागर
1	2	3	4
कृषि करने वाले स्वामी कृषक तथा उनके आश्रित ..	73.8	78.7	13.0
काश्तकार-कृषक तथा उनके आश्रित	5.9	6.3	2.1
खेतिहर मजदूर तथा उनके आश्रित	2.6	2.8	0.4
कृषि न करने वाले भू-स्वामी तथा उनके आश्रित, कृषि संबंधी लगान वसूल करने वाले तथा उनके आश्रित ..	1.6	1.6	2.2
योग ..	83.9	89.4	17.7
कृष्येतर :			
उत्पादन (कृषि से भिन्न)	5.9	4.1	20.2
वाणिज्य	2.9	1.5	20.4
परिवहन	0.4	0.2	2.9
अन्य सेवाएं तथा प्रकीर्ण स्रोत	7.4	4.8	38.8
योग ..	16.1	10.6	82.3

जिले की कुल जनसंख्या के 59.6 प्रतिशत लोग कोई अर्जन नहीं करते और वे दूसरों पर आश्रित हैं। कृषि करने वाली जनसंख्या के अर्जन न करने वाले आश्रितों का प्रतिशत 59.5 और कृष्येतर जनता के ऐसे आश्रितों का प्रतिशत 60.2 है। अर्जन न करने वाले आश्रितों में अधिकांशतः महिलाएं तथा बच्चे हैं। अर्जन करने वाले आश्रित जिले की कुल जनसंख्या के 7.9 प्रतिशत, कृषि कार्य करने वालों के 8.6 प्रतिशत और कृष्येतर कार्य करने वालों के